सिकंदर और पोरस

प्राचीन भारतीय कथा

सिकंदर और पोरस

प्राचीन भारतीय कथा

अध्याय 1

चेतावनी

भारत, 326 ई.पू.

जब मैंने घोड़े को देखा, तो मुझे पता चला कि हम पर एक भारी संकट आया है.

वो घोड़ा एक मूर्ति की तरह पहाड़ी की चोटी पर खड़ा था. उसने नीचे स्थित हमारे गाँव की ओर देखा.

मेरे पिता, हमारे इलाके के राजा थे. उन्होंने अपने महल के आंगन में कदम रखा. फिर उन्होंने घोड़े को घूरा.

"वो आया है," पिताजी ने घोषणा की. "और उसके बाद राजा पोरस की सेना भी आएगी."

हमारे राज्य में हर किसी को घोड़े के आगमन का मतलब अच्छी तरह पता था. सम्राट कभी-कभी अन्य राज्यों में अपने घोड़े भेजता था. घोड़े का आगमन एक बुरी खबर थी. उसका मतलब था कि सम्राट ने हमारे राज्य पर आक्रमण की योजना बनाई थी.

घोड़ा तब तक यात्रा करता जब तक सम्राट पूरे इलाके को अपने कब्जे में नहीं लेता. जब युद्ध समाप्त होता तो फिर घोड़ा अपने देश में वापिस लौटता. उसके बाद उस घोड़े की देवताओं के लिए बलि चढ़ाई जाती.

मेरे पिता, राजा सुंदर के पास एक विकल्प था. वो या तो पोरस की सेना से लड़ सकते थे, या फिर वो आत्मसमर्पण कर सकते थे.

हमारे सैनिक पिताजी के आसपास एकत्र हुए. मेरी माँ, जो रानी थीं, महल से बाहर आईं और चुपचाप मेरे पिता की बगल में खड़ी हो गईं.

घोड़ा हमारी ओर चला आ रहा था और उसके पीछे-पीछे सैनिक चल रहे थे. वे नदी के बहाव की तरह धीरे-धीरे ढलान पर से उतर रहे थे.

उनके हथियार पानी में धूप की तरह चमक रहे थे. कुछ सैनिक रथों पर सवार थे. कुछ सैनिक पैदल मार्च कर रहे थे.

मैंने अपनी जर्जर सेना को देखा. हमारे सैनिक पतले और कमजोर थे. हमारे पास कोई रथ नहीं था. मेरे पिता गर्व से खड़े थे, लेकिन उनकी शाही कपड़े फटे और पुराने थे.

घोड़ा निकट आया. वो एक चट्टान पर गर्व से खड़ा हुआ. उसकी काली चमड़ी धूप में चमक रही थी और उसके रुपहले बाल हवा में उड़ रहे थे.

मैं उससे अपनी आँखें हटा नहीं सका. उसे देख मुझे एक घोड़े की याद आई जो मैंने बहुत पहले देखा था. उस घोड़े का नाम अतुल था. मैंने अतुल को तब पाला-पोसा था जब वो एक छोटा बछड़ा था. हमने हर दिन एक-साथ बिताया था, और वो मेरा सबसे अच्छा दोस्त था.

लेकिन एक सर्दियों की रात चोरों का एक झुंड उत्तर से आया. मैं अतुल को उसके अस्तबल में खाना खिला रहा था. मैंने चुपचाप छिपकर देखा क्योंकि चोर एक-एक करके हमारे घोड़ों को ले जाने के लिए बाँध रहे थे.

जब वे अतुल को लेने आए तो मैं अस्तबल के एक कोने में छिप गया. मैं अपने घोड़े को चोरों से बचा नहीं पाया. मैं बहुत डर गया था.

मेरे पिताजी ने इस तरह अपना सिर हिलाया, जैसे वो भी अतुल को याद कर रहे हों. दुश्मन के यह सैनिक हमारे राज्य को लूट कर ले जायेंगे.

"हमारे सैनिक वफादार हैं, लेकिन वे लड़ने के लिए बहुत कमजोर हैं," उन्होंने कहा.

मैंने अपनी पलकें झपकीं. हम अपने महल का समर्पण कर देंगे, हालांकि वो ढहने की कगार पर था. हम अपने खेतों का भी आत्मसमर्पण करें देंगे, हालांकि वे सूखे और बंजर थे. और फिर मेरे पिता राजा नहीं रहेंगे और मैं राजकुमार नहीं रहूंगा.

"नहीं, पिताजी!" मैं चिल्लाया. मैंने उनके कंधे पर अपना हाथ रखा.

पिताजी ने मुझे झटके से दूर हटाया जैसे वो एक मक्खी को हटा रहे हों. "अपनी तलवार खोजो ऋषि. अगर हम लड़ेंगे, तो तुम हमारे साथ जुड़ना."

मैं खुश था. मैं आत्मसमर्पण नहीं करना चाहता था, लेकिन मैं लड़ना भी नहीं चाहता था. यदि हमने आत्मसमर्पण किया, तो राजा पोरस हमारा स्वागत पौरव राज्य में करेंगे. वो एक दयालु राजा थे. वो हमें अच्छी तरह खिलायेंगे.

"शायद हमें आत्मसमर्पण करना चाहिए," मैं कांपते हुए फुसफुसाया. "मैं अभी लड़ने के लिए बहुत छोटा हूं."

मेरे पिता ने मेरी टखनों पर थूका. "तुम एक कायर हो. तुम राजकुमार बनने के लायक नहीं हो."

जैसे ही घोड़ा और सेना गाँव में दाखिल हुई, हमारे सैनिक आगे बढ़े. मैंने उनके पीछे छिप गया. सिर से लेकर पैर तक मेरा शरीर कांपने लगा. मुझे डर भी लग रहा था, और शर्म भी आ रही थी.

दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे का सामना किया. मेरे पिता अपने सैनिकों के सबसे आगे खड़े थे.

घोड़े ने अपना सिर नीचा किया जैसे वो मेरे पिता को प्रणाम कर रहा हो.

तभी घोड़े ने मेरी तरफ देखा. उसकी आँखें दयालु, गर्व और साहस से भरी थीं. मैं भी वैसा ही बनना चाहता था. लेकिन मुझे गर्व महसूस नहीं हुआ. और मेरी हिम्मत भी नहीं हुई.

फिर एक ऊंचा लड़का आगे की ओर बढ़ा. "मैं राजा पोरस के पुत्र राजकुमार मलयकेतु हूं. आप अपने हथियार डाल दें और आत्मसमर्पण करें, या फिर हथियार उठाकर हम से लड़ें," मलयकेतु हँसा. "लेकिन आप जीत नहीं पाएंगे!"

मेरे पिता चुप रहे.

मलयकेतु ने उनकी ओर देखा. "अच्छा, आप क्या पसंद करेंगे?"

हमने अपनी सांस थामे रखी. हम अपने राजा के जवाब का इंतजार कर रहे थे.

अध्याय दो

राजा का निर्णय

मलयकेतु ने ज़मीन पर अपना पैर पटका. "आप क्या करेंगे? समर्पण करेंगे या मरेंगे?"

मेरे पिता ने उसकी सेना को देखा. "हम लड़ेंगे नहीं," उन्होंने कहा. “हम राजा पोरस, पौरव के सम्राट की प्रजा बन जाएंगे."

कुछ सैनिकों ने कुछ बड़बड़ भी की, लेकिन मुझे पक्का पता था कि उन्होंने ज़रूर राहत महसूस की होगी.

"अपने हथियार नीचे फेंक दो!" मलयकेतु चिल्लाया. "अब तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे."

ढाल और तलवारें जमीन पर पटक दी गईं. मलयकेतु ने हमारे एक सैनिक की तलवार को उठाया और उसके गुट्ठल ब्लेड को छुआ. "एकदम बेकार!" उसने कहा और फिर उसने तलवार जमीन पर फेंक दी.

मैं अपनी आँखें, घोड़े से नहीं हटा पाया. वो गौरवान्वित लग रहा था लेकिन थका भी था. हर बार जब मलयकेतु ने उसकी गर्दन को थपथपाया तो घोड़ा पलट गया.

वो क्या संदेश लाया था? क्या घोड़ा को वो पता था? मैंने अचरज किया. क्या उसे पता था कि उसका आगमन दूर-दूर के गाँवों में भय फ़ैलाता था.

इससे भी ज़्यादा मैंने आश्चर्य किया कि क्या घोड़े को यह पता था कि अपने राजा के पास लौटने पर उसका वध कर दिया जाएगा!

घोड़े की गर्दन के झुके होने से मुझे लगा कि उसे इस बात का एहसास था.

"अपने घोड़ों और अपने रथों को इकट्ठा करो," मलयकेतु ने मेरे पिता से कहा. "आपकी संपत्ति अब हमारी संपत्ति है."

मेरे पिता को शर्म आई. "हमारे पास न कोई घोड़ा और न कोई रथ है."

मलयकेतु का मुंह लटक गया. फिर उसने चुपके से घोड़े के कंधे को थपथपाया. घोड़ा फिर आगे चल दिया.

"हमने क्यों यहाँ पर अपना समय बर्बाद किया," मलयकेतु ने कहा. उसने हमारी छोटी सेना को देखा और फिर मेरी माँ, रानी को देखा. "देखो, आपकी सेना अब पोरस की सेना बन जाएगी, और आपकी रानी पोरस की नौकरानी होगी."

मुझे बहुत गुस्सा आया. मुझे लगा था कि पोरस दयालु होगा. मुझे यह नहीं पता था कि वो हमें अपना गुलाम बनाएगा.

मेरी माँ मुस्कुरा दी. "नौकरानी बनने से मर जाना बेहतर होगा!" उन्होंने कहा.

"आपके घोड़ों को भोजन और पानी की आवश्यकता होगी," मेरे पिता ने कहा. उन्होंने फिर उस काले घोड़े को देखा. "विशेष रूप से इसे."

मैं सैनिकों के पीछे छिपा था. पिता ने मुझे कटु निगाह से देखा. उन्हें पता था कि मैं कहां छिपा था.

"ऋषि! उस घोड़े को नदी तक ले जाओ."

मैं घोड़े की ओर बढ़ा. लेकिन जैसा ही मैं आगे बढ़ा मैं फिसल गया और जमीन पर मुंह के बल गिर पड़ा. मेरा मुँह मिट्टी से सन गया.

यह तमाशा देखकर पोरस के सैनिक बड़ी ज़ोर से हँसे. मैंने अपने सैनिकों को भी हँसते हुए सुना. शर्म से मेरा चेहरा जमीन में गढ़ गया.

"उठो!" मलयकेतु चिल्लाया.

मुझे अपने गाल पर एक गर्म, गीली नाक महसूस हुई. मैंने ऊंचे, काले घोड़े की भूरी आँखों में देखा. उसने फिर से मुझे छुआ, उसकी आँखों में खेद था.

मैंने खड़े होकर खुद को झाड़ा. मैंने अपने माता-पिता या सैनिकों की ओर नहीं देखा. मैंने केवल घोड़े को देखा. "मेरे पीछे-पीछे आओ," मैंने उससे कहा.

अध्याय 3

एक नया साम्राज्य

मैं घोड़े को नदी तक लेकर गया. जब हम पानी के पास पहुँचे, तो उसने मेरी ओर देखा. "पानी पियो," मैंने उससे कहा. मैंने खुद अपना मुंह पानी में डुबोया और एक बड़ी घूँट पी.

घोड़े ने भी वैसा ही किया. फिर उसने अपना सर हिलाया और वो हिनहिनाया. ऐसा लगा मानो वो खुशी से हंस रहा हो.

"तुम बहादुर हो. तुम किसी भी सैनिक जैसे ही बहादुर हो," मैंने कहा, "मैं तुम्हें लड़ाकू बुलायूँगा."

फिर लड़ाकू ने अपना एक खुर उठाया और तेज़ी से पानी में छपाक करके मुझ पर पानी छिड़का. मैं हँसा और मैंने भी उस पर पानी फेंका.

लड़ाकू नदी के पानी में इधर-उधर चलता रहा. उसने पीछे मुड़कर देखा, जैसे वो मेरा इंतजार कर रहा हो. मैं तैरकर उसकी ओर गया. उसने अपने घुटने टेके, और फिर मैं उसकी पीठ पर चढ़ गया. फिर हम दोनों लहरों के बीच एक-साथ सरपट दौड़े. ऐसा लगा जैसे हम एक-दूसरे के पुराने दोस्त हों.

फिर मुझे अपने पुराने घोड़े अतुल की याद आई, और उससे मुझे दुख भी हुआ.

जब हम वापिस लौटे, तो मलयकेतु और मेरे पिता का एक सैनिक हमारा इंतज़ार कर रहा था.

"आज रात आप घोड़े की रखवाली करेंगे, राजकुमार ऋषि," सैनिक ने कहा.

मलयकेतु हँसा. "लेकिन अब तुम राजकुमार नहीं हो," उसने कहा. "तुम अब गुलाम हो."

लड़ाकू गुस्से में हिनहिनाया, जैसे कि मलयकेतु के शब्द उसे समझ में आये हों.

उस रात, मैं चरागाह में लड़ाकू की बगल में ही सोया. उसकी बड़ी छाती सांसों के साथ ऊपर-नीचे उठ रही थी. जल्द ही उस घोड़े की सांस बंद होगी. जल्द ही वो देवताओं के लिए बलि चढ़ा दिया जाएगा.

मेरे आंसू लड़ाकू की चिकनी काली चमड़ी पर गिरने लगे.

जब हम सुबह अपन गाँव को छोड़ने के लिए तैयार हुए तब सूरज तप रहा था. माँ ने मोर के पंखों के पंखे से खुद पर हवा करी. "मैं किस रथ पर सवार होकर जाऊंगी?" उन्होंने पूछा.

मलयकेतु ने उनके पंखे को छीनकर उसे जमीन पर फेंक दिया. "आप पैदल चलकर जाएँगी," उसने कहा.

"हमारे साथ ऐसा खराब व्यवहार मत करो," मेरे पिताजी ने कहा.

"आप हार चुके हैं," मलयकेतु ने कहा. "अब आप और कैसा व्यवहार चाहते हैं?"

"हमारे साथ राजा जैसा सलूक करो," मेरे पिताजी ने कहा.

मलयकेतु घुर्राया.

कई दिनों और रातों तक चलकर हमने पौरव की यात्रा की. हम हिमालय की नुकीली पहाड़ियों से गुज़रे. हमने छोटी नदियों और नालों को पार किया. अंत में, हम हाइडस्पेस नदी पर पहुँचे. नदी के उस पार पौरव, पोरस का राज्य था.

राजा पोरस हमसे मिलने आया. उतना ऊंचा आदमी मैंने पहले कभी नहीं देखा था. उसका मुकुट मोतियों और सोने से चमक रहा था. उसने हमें घूरकर देखा जिससे मैं घबरा गया और डर से कांपने लगा.

"घोड़े ने जीतने के लिए आपका राज्य चुना, राजा सुन्दर," पोरस ने मेरे पिता से कहा. "आपने आत्मसमर्पण करके ठीक ही किया. लेकिन मुझे आपसे राज्य हड़पने का खेद है."

मेरे पिताजी ने आह भरी. "राजाओं का यही तरीका होता है," उन्होंने कहा.

"उन्हें काम पर लगाओ!" मलयकेतु ने कहा. "घोड़े की बलि से पहले हमें बहुत कुछ करना है."

"पहले वे खाएंगे. फिर वे सोएंगे," राजा पोरस ने कहा.

"वे आराम के लायक नहीं हैं!" मलयकेतु ने विरोध किया.

पोरस अपने बेटे पर घुर्राया. "मैं राजा हूँ! वे वही करेंगे जो मैं कहूंगा!"

मलयकेतु का मुंह लटका गया, लेकिन उसने मुझे अपनी आँखों की कनखियों से देखा.

अध्याय 4

बलिदान

"कल रात हम घोड़े की बलि शुरू करेंगे," राजा पोरस ने कहा. "घोड़े ने हमारे लिए अच्छा काम किया है. उसने कई राज्यों पर विजय प्राप्त की है."

मुझे कंपकंपी आई. मेरे बगल में, लड़ाकू ने जमीन पर पंजा मारा और अपनी नाक से सांस फेंकी.

मैंने प्रार्थना की कि कल कभी नहीं आए.

लेकिन कल आया. मुझे बलिदान समारोह की तैयारी में लगाया गया. जब मैंने वेदी बनाने के लिए ईंटें उठाईं, तब मलयकेतु ने मुझे देखा. "तुम एक अच्छे राजकुमार थे," उसने कहा. "लेकिन अब तुम उससे भी अच्छे गुलाम हो."

मैंने उसके कटाक्ष को नजरअंदाज किया, हालांकि अंदर ही अंदर मैं गुस्से से जल रहा था.

उसे चरागाह में पहचानना आसान था. वह अन्य घोड़ों की तुलना में ऊंचा खड़ा था. उसके रुपहले बाल चाँदनी में चमक रहे थे.

"आज रात तुम देवताओं के पास जाओगे," मैंने उससे कहा. उसने मेरे हाथों से घास खाई. "तुम स्वर्ग में एक हीरो होगे."

लड़ाकू के बड़े नथुने फूल गए. उसके विशाल कंधों की मांसपेशियों में तनाव आ गया.

मेरी पीठ दर्द करने लगी और मेरा गला सूख गया. मैं पानी के लिए तरस गया. मुझे याद आया कि कैसे लड़ाकू और मैं कुछ दिन पहले नदी में तैरे थे.

लड़ाकू फिर कभी नहीं तैरेगा, और मैं उसके लिए कुछ भी कर सकने में असमर्थ था.

उस रात समारोह से पहले, मैं लड़ाकू से मिलने गया. मैंने उससे अलविदा कहा, जो मैं पहले अतुल के साथ नहीं कर पाया था.

वो अपने पिछले पैरों के बल खड़ा हुआ. शायद वो मुझ से कह रहा था कि उसे डर नहीं था, और मुझे भी नहीं डरना चाहिए.

"काश मैं भी तुम्हारी तरह साहसी होता," मैंने कहा.

अगले दिन बहुत बढ़िया दावत थी - रोटी और फलों की, लेकिन मैं कुछ भी खा नहीं सका.

और फिर बलि का समय आया. हम वेदी के पास इकट्ठे हुए. वेदी के बीच में आग जलाई गई थी.

आग की लपटें आसमान तक पहुंच रही थीं. लड़ाकू को आशीर्वाद देने वाला ब्राह्मण पुजारी इंतजार कर रहा था.

लड़ाकू को वेदी की ओर ले जाया गया. उसने अपना सिर ऊंचा रखा. उसकी पूंछ उसके पीछे हिलती रही. उसकी आँखों में से लपटें निकल रही थीं.

ब्राह्मण ने लड़ाकू की नाक को छुआ. "हे भगवान, हम आपको यह घोड़ा भेंट करते हैं. वो दो साल भटका है."

"वो जहाँ भी गया उसने उन राज्यों पर विजय प्राप्त की. वह राजा पोरस के लिए महानता और धन लाया."

मलयकेतु आगे बढ़ा. उसके हाथों में एक युद्ध का फरसा था. उसकी धार आग में चमक रही थी.

"हम इस घोड़े को स्वर्ग को समर्पित करते हैं," ब्राह्मण ने कहा.

मलयकेतु ने अपने सिर के ऊपर फरसे को उठाया.

तभी मुझे अपना घोड़ा, अतुल याद आया. मुझे याद आया कि मैं चोरों से अतुल को बचा नहीं सका था. काश मैं कुछ अधिक साहसी होता. मैंने एक गहरी साँस ली.

"रुको!" मैं चिल्लाया.

मलयकेतु रुका, उसने मेरी ओर देखा. राजा पोरस ने अपनी भौहें उठाईं. "इस घोड़े की बजाए मेरी बलि चढ़ाओ," मैंने कहा.

अध्याय 5

एक महान आक्रमण

राजा पोरस भड़क उठे. ब्राह्मण भी भड़का. लेकिन मलयकेतु उल्लास से मुस्कराया.

"एक मानव बलिदान?" पोरस ने कहा. "लेकिन मानव बलि एक लम्बे अर्से से नहीं दी गई है."

"बिल्कुल, पिताजी!" मलयकेतु ने सहमति जताई. "और इसीलिए मानव बलि दी जानी चाहिए!""लेकिन" पोरस ने कहा. फिर वो गहराई से कुछ सोचने लगा.

"देवता प्रसन्न होंगे," मलयकेतु ने जोर देकर कहा. "और आप जानते ही हैं कि जब देवता खुश होते हैं तो क्या होता है. फिर देवता हमें खुश करते हैं."

पोरस ने कहा, "लेकिन वो एक राजकुमार है." फिर उसने मुझे और मलयकेतु को देखा.

"वो कभी एक राजकुमार हुआ करता था," मलयकेतु ने सुधारा.

राजा पोरस ने सिर हिलाया. "उस लड़के को ले लो," उन्होंने ब्राह्मण से कहा. "लड़के ने बहुत साहस दिखाया है."

मुझे सच्चाई का एहसास हुआ. मुझे डर भी लगा, लेकिन मैं सामना करने को तैयार था.

दो सैनिकों ने मेरी बाहों को पकड़ा और वे मुझे वेदी तक ले गए. "तुम्हारे लिए, लड़ाकू," मैं फुसफुसाया.

जब मलयकेतु ने मेरी ओर देखा तो उसकी आँखें सिकुड़ गईं. उसके चेहरे पर एक दुष्ट हंसी थी. "शायद हमें उन दोनों की ही बलि चढ़ाना चाहिए," उसने कहा. "लड़के और घोड़े दोनों को."

"नहीं!" मैं चिल्लाया, लेकिन राजा पोरस अपने विचारों में लीन थे. "क्या उससे देवता प्रसन्न होंगे?" उन्होंने ब्राह्मण से पूछा. ब्राह्मण ने अपना सिर हिलाया.

मलयकेतु ने अपना फरसा उठाया. भीड़ एकदम चुप थी. मेरी माँ के सिसकने के सिवाए वहां और कोई आवाज़ नहीं थी.

मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा. तभी मुझे एहसास हुआ कि वो मेरे दिल की धड़कन नहीं थी. वो घोड़े के खुरों की गर्जन थी.

"अब क्या?" मलयकेतु चिल्लाया.

सैनिकों का एक समूह भीड़ को चीरता हुआ आगे आया. "राजा पोरस!" उनमें से एक चिल्लाया "अलेक्जेंडर (सिकंदर) की सेना पौरव की ओर बढ़ रही है!"

मैं हांफने लगा. सिकंदर महान!

वर्षों से हमने मैसेडोनिया के सिकंदर और उसकी निडर सेना की वीरता की कहानियाँ सुनी थीं. सिकंदर ने कई राज्यों को जीता था और कई लोगों को मार डाला था. और अब वो यहाँ पौरव को जीतने के लिए आया था.

"बलि बंद करो!" पोरस ने आदेश दिया. "हमें सिकंदर से लड़ने के लिए तैयारी करनी चाहिए."

मेरे पिता ने आगे बढ़कर कहा, "मेरी सेना आपकी सेना में शामिल हो जाएगी. हम एक साथ मिलकर सिकंदर को हाइडस्पेस नदी को पार करने से रोकेंगे."

सैनिकों ने अपने घोड़ों पर चढ़कर छलांग लगाई. अन्य लोग युद्ध हाथियों को इकट्ठा करने के लिए भागे. इस कोलाहल में लोग, लड़ाकू और मुझे भूल गए.

मैं लड़ाकू की तरफ भागा. "मेरे पीछे आओ. हम यहाँ से भाग जाएंगे!" मैंने उससे आग्रह किया.

लेकिन लड़ाकू वहां से बिल्कुल नहीं हिला.

मेरे पिता ने मेरा कंधा पकड़कर कहा. "ऋषि, तुमने आज रात साहस दिखाया. क्या तुम एक बार फिर से साहस नहीं दिखाओगे? क्या तुम यहाँ रहकर सिकंदर से नहीं लड़ोगे?"

मुझे डर महसूस होना चाहिए था. लेकिन अब मुझे कोई डर नहीं था.

"मैं लड़ूंगा," मैंने कहा. मैंने लड़ाकू की गर्दन को सहलाया. "हम मिलकर लड़ेंगे."

जब हम हाइडस्पेस नदी की ओर बढ़े तो हाथियों की गर्जन शुरू हो गई थी.

भारी बारिश हुई. कीचड़ में से रथ को खींचने के लिए घोड़ों को बहुत दम लगाना पड़ा.

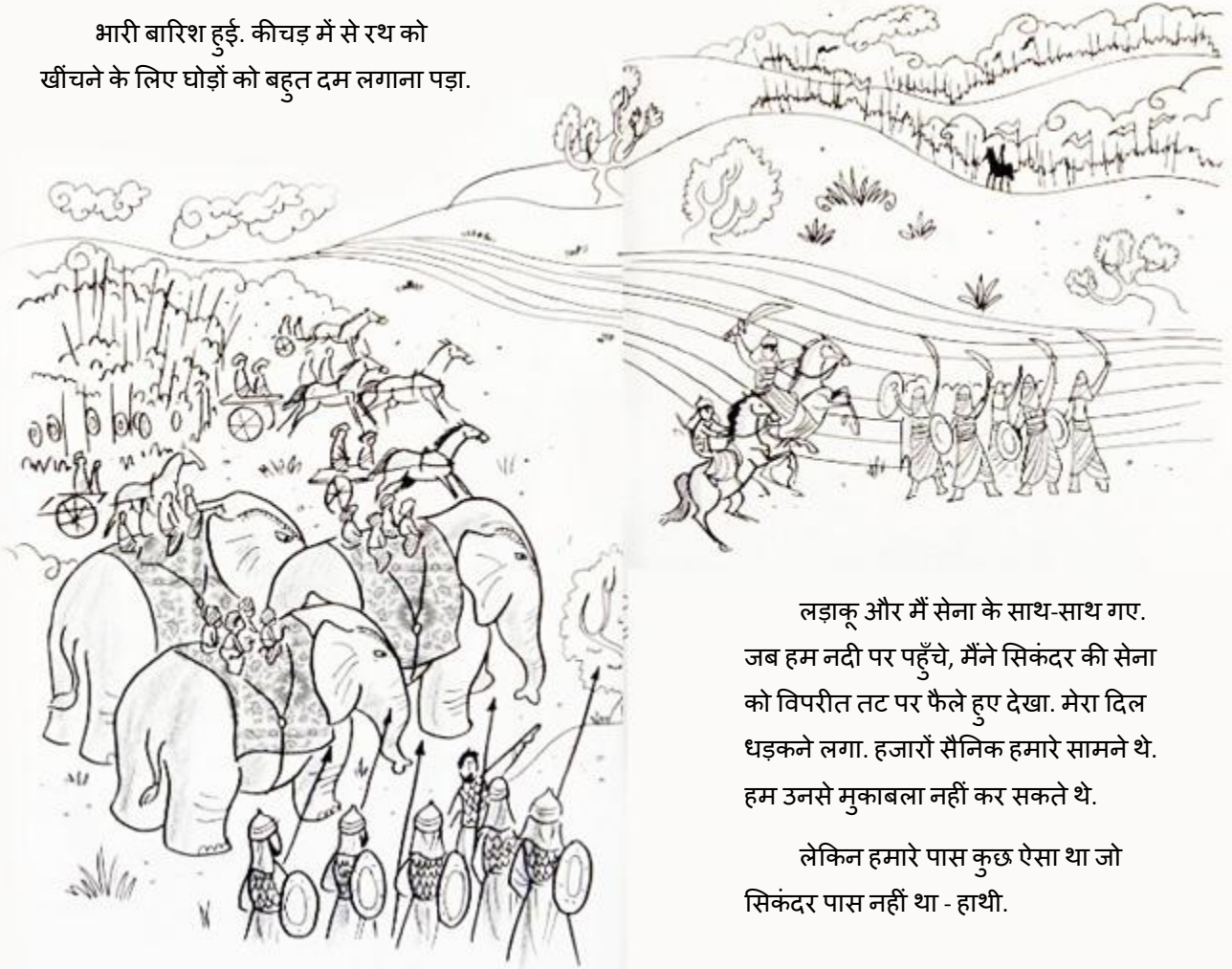

लड़ाकू और मैं सेना के साथ-साथ गए. जब हम नदी पर पहुँचे, मैंने सिकंदर की सेना को विपरीत तट पर फैले हुए देखा. मेरा दिल धड़कने लगा. हजारों सैनिक हमारे सामने थे. हम उनसे मुकाबला नहीं कर सकते थे.

लेकिन हमारे पास कुछ ऐसा था जो सिकंदर पास नहीं था - हाथी.

जब सिकंदर के घोड़ों ने हाथियों को देखा, तो वे भयभीत हो गए. उन्होंने हाथियों को नदी की ओर, अपनी सूंडों को लहराते हुए देखा.

"वार करो!" पोरस चिल्लाया.

लड़ाई शुरू हुई. एक भाला मेरी कनपटी के पास से गुज़रा. लेकिन लड़ाकू वहां से कूद गया. मैं लड़ाकू की पीठ से चिपका रहा और जब मौका मिला तब तीर चलाता रहा.

लड़ाकू इतना तेज था कि तीर मुझे पकड़ नहीं पाते थे. मुझे पता था कि अगर मैं लड़ाकू के साथ नहीं होता तो मैं कई मौतें मर चुका होता.

भले ही हमारे पास हाथी थे, लेकिन सिकंदर की सेना बड़ी और ताकतवर थी. जल्द ही वे नदी के तट तक पहुंच गए.

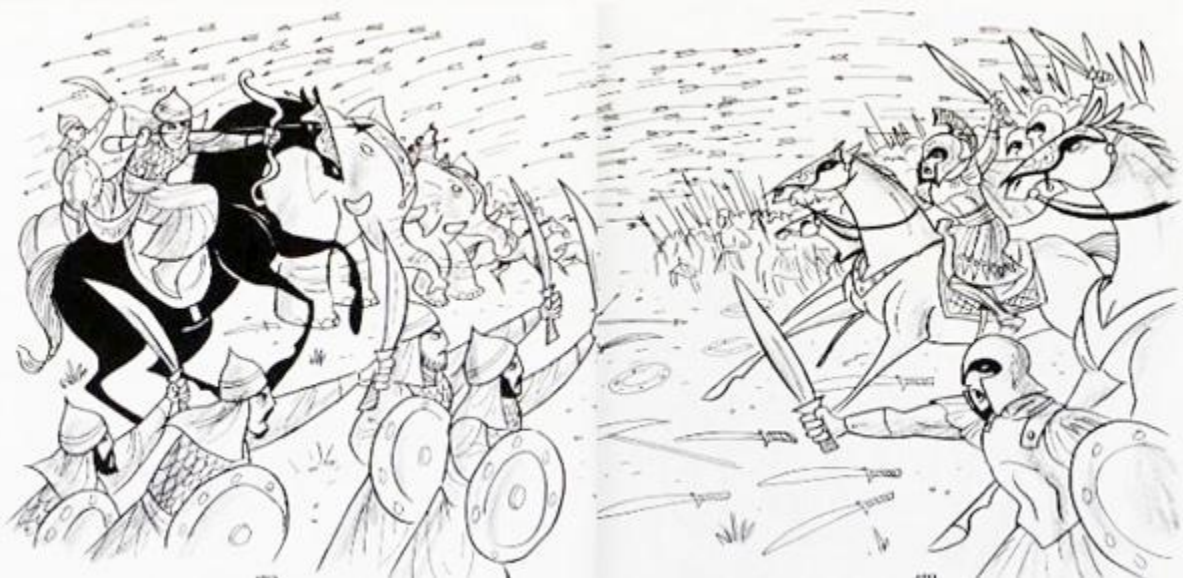

सिकंदर को जब हमने रोकने की कोशिश तो कई बाण हवा में चले. मैंने राजा पोरस के रथ को कीचड़ में फंसे देखा. "चलो!" पोरस चिल्लाया, लेकिन घोड़े रथ को खींच नहीं सके. रथ कीचड के अटक गया था.

मैंने लड़ाकू को पोरस की ओर मदद के लिए मोड़ा. जैसा ही मैंने वो किया, पोरस ने खड़े होकर गुस्से में अपने घोड़ों पर हथियार लहराए.

तभी पोरस को एक तीर लगा और वो गिर वहीँ गया.

अध्याय 6

राजकुमार और लड़ाकू

"राजा पोरस!" लड़ाकू और मैं उसकी ओर सरपट दौड़े.

मलयकेतु भी हमारे साथ-साथ ही वहां पहुंचा. मैं लड़ाकू की पीठ से कूदा और राजा की बगल में घुटने टेक कर बैठा. "वो जीवित हैं," मैंने मलयकेतु से कहा. "हमें उन्हें बचाना चाहिए."

मलयकेतु भय से कांप उठा.

हमने लड़ाकू की पीठ पर राजा पोरस को डाला और फिर उन्हें युद्ध के मैदान से दूर ले गए. मैंने सिकंदर की सेना ने हाइडस्पेस को पार करते हुए सुना.

"उन्होंने हमें जीत लिया है!" मलयकेतु ने रोते हुए कहा.

"अब तुम राजकुमार नहीं रहोगे," मैंने कहा.

मैं घायल राजा के ऊपर झुका. "क्या उन्होंने हमें जीत लिया है?" राजा ने फुसफुसाते हुए पूछा.

"हाँ, हमने जीत हासिल की है," मेरे ऊपर से एक आवाज ने कहा. मैं जब मुड़ा तो मैं सिकंदर महान के चेहरे को देखकर चकित रह गया. मलयकेतु डर से चिल्लाया और उसने अपनी ढाल से खुद को ढँक लिया. लेकिन मैं वहीं खड़ा रहा.

"क्या आप राजकुमार हैं?" सिकंदर ने पूछा.

"हाँ, मैं राजकुमार हूँ," मैंने कहा. "और यह राजा पोरस हैं."

सिकंदर ने अपने पैर के अंगूठे से पोरस को छुआ. “राजा पोरस, हमने आपको हरा दिया है."

"अब, हम आपके साथ कैसा सलूक करें?"

पोरस कमजोर था लेकिन वो उठकर बैठा. "जैसा कि एक राजा, दूसरे राजा के साथ करता है," उन्होंने कहा.

सिकंदर हंसा. "मुझे आपका उत्तर पसंद आया. ये राज्य अब मेरा है. लेकिन आप यहां के शासक बने रहेंगे."

मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. मुझे थोड़ी निराशा ज़रूर हुई. मैं चाहता था कि मलयकेतु, सिकंदर का गुलाम बने!

सिकंदर ने आह भरी. "आज का दिन बड़ा बुरा दिन था. इस भयानक लड़ाई में मेरा घोड़ा मारा गया."

लड़ाकू ने हिनहिनाकर अपना सिर नीचे कर लिया.

"मुझे एक और घोड़ा चाहिए," सिकंदर ने अपनी बात जारी रखी. "जो बहादुर हो और जो मुझे युद्ध में ले जा सके."

लड़ाकू हल्के से हिनहिनाया. मैंने उसकी नाक पर हाथ फेरा. मुझे पता था कि मुझे क्या करना चाहिए.

"यह घोड़ा बहुत मजबूत और बहादुर है. उसका नाम लड़ाकू है," मैंने सिकंदर से कहा. फिर मैंने एक गहरी साँस ली. "अब वो घोड़ा आपका है."

सिकंदर ने सिर हिलाया. "लड़ाकू और मैं साथ मिलकर इस दुनिया को जीत लेंगे!"

लड़ाकू ने मेरे कंधे को अपनी नाक से रगड़ा. वैसे वो सिकंदर के साथ खुश था.

"तुम एक अच्छे राजकुमार हो," सिकंदर ने मुझ से कहा और फिर वो लड़ाकू पर चढ़कर आगे बढ़ गया.

लड़ाकू ने समझौते की हामी भरी. मलयकेतु अपनी ढाल के नीचे रोने लगा.

सिकंदर दुनिया को जीत नहीं पाया. वो भारत को भी जीत नहीं सका. एक साल बाद उसने हमारा देश छोड़ दिया.

शायद यह विश्वास करना कठिन हो, लेकिन युद्ध के बाद मलयकेतु और मैं दोस्त बन गए. राजा पोरस और मेरे पिता भी दोस्त बन गए. हमारे ऊपर पोरस का शासन हमेशा निष्पक्ष रहा.

वर्षों तक मैंने अक्सर लड़ाकू के बारे में सोचा, और मैं खुश था. मुझे पता था कि वह भी खुश था. शायद कभी-कभी वो भी मेरे बारे में सोचता होगा. आखिरकार, हमने एक-दूसरे की जान बचाई थी. और इस बात को आसानी से भुलाया नहीं जा सकता है.

बलिदान समारोह

प्राचीन भारतीय कई देवी-देवताओं में विश्वास करते थे. उनका मानना था कि देवता पानी, हवा, आग और सूर्य में रहते थे.

प्राचीन भारतीयों ने अक्सर देवताओं को बलिदान दिया. उनका मानना था कि बलिदान उनके लिए धन और खुशी लाएगा.

देवताओं को कई चीजें बलिदान या उपहार के रूप में दी जाती थीं. लोग अक्सर बांस के अंकुर, चावल या अन्य पौधों के उपहार देते थे. कभी-कभी गायों या घोड़ों जैसे जानवरों की बलि भी देवताओं के सम्मान में दी जाती थी.

बलिदान समारोह अक्सर कई दिनों तक चलते थे. भोजन और संगीत अक्सर समारोह का हिस्सा होते थे.

अनुष्ठान में पुजारी, राजा और आम लोग भाग लेते थे. पुजारी, या ब्राह्मण उस वस्तु या जानवर को आशीर्वाद देते, जिसे बलिदान किया जाना था.

घोड़े की बलि अनोखी होती थी. समारोह के कई साल पहले से उसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती थीं. एक घोड़े को राज्य के बाहर भटकने के लिए चुना जाता था. वो जहाँ भी घूमता था, राजकुमार सहित सैनिकों की एक सेना, उस घोड़े का पीछा करती थी. जिस जगह या राज्य से घोड़ा गुज़रता था उसे राजा द्वारा जीत लिया समझा जाता था. कभी-कभी राजा के सैनिकों और दूसरे राज्यों के लोगों के बीच लड़ाई भी होती थी.

जब घोड़ा राज्य में वापस आता था तो उसे बलि चढ़ा दिया जाता था. समारोह लोकप्रिय होता था और उसमें कई लोग भाग लेते थे. घोड़े का बलिदान इतना महत्वपूर्ण माना जाता था कि उसके सम्मान में अक्सर सोने के सिक्के वाले जाते थे. सिक्के पर घोड़े की छवि अंकित होती थी.

फिर बाद में.भारतीयों ने जानवरों की बलि बंद कर दी. हालाँकि, वे अभी भी कुछ अनुष्ठान करते हैं जिसमें एक गाय के ऊपर एक चाकू रखा जाता है.
बलि की परंपरा को याद रखने के लिए ही वो ऐसा करते हैं.

समाप्त